डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा.

धीरे-धीरे उतर क्षितिज से

प्रश्न: महादेवी वर्मा द्वारा रचित "धीरे-धीरे उतर क्षितिज से" कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

प्रस्तुत कविता महादेवी वर्मा द्वारा रचित है। महादेवी जी छायावाद की एक मजबूत स्तंभ हैं। उनकी इस कविता में वसंत ऋतु की रात्रि की प्राकृतिक सुषमा का बड़ा सुंदर और स्वाभाविक चित्रण हुआ है। कवियत्री कहती हैं — हे वसंत की रात्रि तुम आकाश से पृथ्वी पर धीरे-धीरे उतर कर आओ, तुम्हारी वेणी में तारों से मोती जड़े हैं, चंद्रमा का अनुपम शीशफूल तुम्हे सुशोभित कर रहे हैं, किरणों की चुड़ियाँ तुमने धारण कर रखी हैं और साथ ही शुभ्र मेघों का वस्त्र धारण किया है। अत: — तुमसे मेरा अनुरोध है कि तुम नेत्रों से ओस के सुंदर मोती बिखेरती हुयी सबको पुलकित करती हुई आओ।

आगे वसन्त रजनी को संबोधित करती हुयी कवियत्री कहती हैं — पत्तों की मर्मर ध्वनि ही तुम्हारे नूपुरों की मधुर ध्वनि है और तुमने भ्रमरों से गुंजित कमलों की किंकणी धारण कर रखी है। अत: मंद-मंद बहती हुयी सरिता की मंद चाल अपने पैरों में धारण कर, अपनी मधुर-मुस्कान से खिलती हुयी चाँदी के समान चाँदनी बिखेरती हुयी और खिलखिलाती हुयी मेरे पास आओ।

कवियत्री कह रही हैं कि हे वसन्त की रात्रि पुलकित कर देने वाले स्वप्न ही तुम्हारे रोमावली हैं और हाथों के मधुर स्मृतियों के लिए हुए, मलय पवन के चंचल दुपट्टे को धारण कर तुम नीली छाया के समान फैलती हुयी संसार से अभिसार के लिए सुसज्जित होकर आओ।

P.T.O

कवियत्री प्रभातकालीन सौंदर्य का चित्रण करते हुए कहती हैं कि नदी के हृदय में लहरों की सिहरन होने लगी है, मकरंद पुष्प खिल रहे हैं तथा न केवल प्रत्येक क्षण विभोर हैं अपितु धरती भी प्रिय के आगमन की आहट सुनकर पुलकित हो उठी है। इसलिए हे वसंत! तुम सिहरती हुयी आओ।

यहाँ प्रस्तुत पंक्तियों में मानवीकरण की सहायता से वसंत रजनी को अभिसारिका की नायिका बनाकर प्रस्तुत किया गया है। यहाँ लाक्षणिकता व विशेषण विपर्यय आदि का सुंदर प्रयोग हुआ है। इसमें संदेह नहीं कि यह गीत छायावादी शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ कोमल, मधुर, चित्रात्मक शब्दों के प्रयोग द्वारा रात्रिकालीन वसंत का अति सुन्दर चित्र उपस्थित हुआ है। वस्तुत: महादेवी जी ने वसंत रजनी को अभिसारिका नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है। उसे प्रकृति के विविध रूप प्रदान करते हुए आभरणों से सुसज्जित किया है। अत: इस गीत में वसंत वैभव का उपयुक्त परिचय मिल जाता है। यहाँ कवियत्री ने प्रकृति का मानवीकरण करके प्रकृति-चित्रण का एक अनूठा रूप प्रस्तुत किया है।

U. G (Hindi Hons)
B. A. Part I
" Utar Khitij se "